हिरोशिमा का शांति पेड़

छोटे बोन्साई की बड़ी कहानी

सैंड्रा मूर
चित्र: काज़ुमी वाइल्ड्स

"लगभग 400 साल पुराना बोन्साई, हिरोशिमा पर परमाणु बमबारी के बावजूद जीवित रहा! आणविक विस्फोट के केंद्र से कुछ ही दूर, यामाकी के घर में एक दीवार के पीछे एक बेंच पर बैठे हुए इस पेड़ का बच जाना अपने आप में आश्चर्यजनक था. लेकिन उतना ही आश्चर्यजनक यह था कि श्री यामाकी ने बोन्साई दान करते समय इस महत्वपूर्ण तथ्य का उल्लेख तक नहीं किया और उन्होंने अपने पूर्व दुश्मन अमेरिका को वो उत्कृष्ट कृति भेंट कर दी. उपहार देते समय श्री यामाकी ने शायद उनके गृह नगर पर बम गिराने के लिए अमेरिका को क्षमा कर दिया. एक पल में, "यामाकी पाइन" शांति का एक अंतरराष्ट्रीय प्रतीक बन गया."

फेलिक्स लॉफलिन,

अध्यक्ष, राष्ट्रीय बोन्साई फाउंडेशन

हिरोशिमा का शांति पेड़

छोटे बोन्साई की बड़ी कहानी

सैंड्रा मूर

चित्र: काज़ुमी वाइल्ड्स

मेरा जन्म लगभग चार सौ साल पहले मियाजिमा द्वीप पर हुआ था. जब मैंने मिट्टी से ऊपर अपना सिर उठाया तो मैंने पहाड़ी झील में अपना प्रतिबिंब देखा. ऊंचे पेड़ों का एक जंगल मुझे घेरे हुए था: देवदार, हरे विलो और हिनोकी. बन्दर, मोमोंगा और चमगादड़ उनके पत्तों और शाखाओं के बीच से उड़ रहे थे.

एक सुबह, जब गर्मियों का सूरज तप रहा था, तब मैंने एक आदमी को देखा. अकेले, अपनी पीठ पर एक टोकरी बांधे, वह खूबसूरत पेड़ों से बातें कर रहा था. बाद में मुझे उसका नाम पता चला: इटारो.

इटारो ने कहा, "इस द्वीप ने मेरे दिल को छू लिया है मुझे यहाँ से एक यादगार, अपने साथ वापस ले जानी चाहिए." फिर उसने कुछ ऐसा किया जिसने मेरी ज़िंदगी हमेशा के लिए बदल दी.

उसने सावधानी से मेरी जड़ों के चारों ओर खुदाई की, धीरे से मेरे तने को उठाया, और मुझे पास के एक झरने से गीले कपड़े में लपेटा. जल्द ही, मैं जंगल को पीछे छोड़ते हुए पहाड़ी रास्ते पर उसका साथी बन गया.

पहले तो मुझे इटारो का घर अजीब तरह से शांत लगा. मुझे अपनी शाखाओं पर पड़ती हल्की बारिश और पत्तों की छतरी में ऊंची आवाज में चिल्लाते बंदरों की याद आती थी. लेकिन धीरे-धीरे मुझे अपना नया घर और वह चीनी मिट्टी का गमला पसंद आने लगा जिसमें मुझे लगाया गया था. पचास से ज़्यादा सालों तक इटारो ने मुझे पानी पिलाया और मेरी शाखाओं की छंटाई की, और उसने मुझे एक मूर्तिकार की तरह एक छोटे बोन्साई पेड़ का आकार दिया.

"तुम मुझे उस जादुई द्वीप की याद दिलाते हो जहाँ मैं गया था," इटारो ने कहा. उसके बाल अब उम्र के साथ सफ़ेद हो गए थे. "इसलिए मैंने तुम्हें मियाजिमा नाम दिया."

जब इटारो की मृत्यु हुई, तो उसके बेटे वाजिरो ने मेरी देखभाल की. और जब वाजिरो को चलने में मदद के लिए एक छड़ी की ज़रूरत पड़ी, तो उसने अपने बेटे सोमेगोरो को सिखाया कि वो मेरी देखभाल कैसे करे.

तीन सौ सालों तक, मेरी देखभाल करने का काम पिता अपने बेटे, फिर बेटे अपने बेटे को सौंपते रहे.

जब हमारा परिवार हिरोशिमा गया, तो मासारू ने मेरी देखभाल की. उसने हमारे घर में और भी बोन्साई लगाए. फिर बीच, पाइन और ब्लू जुनिपर के पेड़ भी मेरे साथ आकर जुड़ गए.

1945 में, कुछ भयानक हुआ. एशिया में युद्ध छिड़ा हुआ था, और अमरीका ने हिरोशिमा पर परमाणु बम गिराया. परमाणु बम मेरे घर से दो मील दूर फटा था.

बहुत से लोग घायल हुए या फिर मारे गए,
और ज़्यादातर इमारतें, मलबे में तब्दील हो गईं.

हमारा परिवार भाग्यशाली था. हालाँकि हमारे घर की खिड़कियाँ टूट गई थीं. उड़ते हुए कांच से मुझे भी थोड़ी सी चोट लगी थी. मासारू कृतज्ञता से अपने घुटनों पर गिर गया और उसने नीचे ज़मीन को चूमा. मेरा भी सिर झुकाने का मन हुआ, क्योंकि मेरा दोस्त सुरक्षित था.

कई सालों तक, हिरोशिमा में हर कोई बुरी बीमारियों से पीड़ित रहा. लेकिन धीरे-धीरे, मासारू अपने दैनिक बोन्साई की देखभाल का काम दुबारा करने लगा: पानी देना, छंटाई करना, तार बांधना और आकार देना. और जैसे-जैसे मैं फिर से जीवित हुआ, उसका भारी दिल भी हल्का होता गया.

फिर धीरे-धीरे लोगों ने हिरोशिमा का पुनर्निर्माण करना शुरू किया. दस साल बाद, हमारे शहर में नई सड़कें, फुटपाथ और उसके साथ उत्साह भरा था. तभी हमारे पोर्च से कुछ ही मील की दूरी पर, "शांति पार्क" ने अपने द्वार खोले.

बीस साल बाद, कक्षाएँ एक बार फिर बच्चों से भरी हुई थीं, और खेतों में कॉसमॉस से फूल हंस रहे थे.

फिर, युद्ध के तीस साल बाद, मेरे जीवन ने सबसे आश्चर्यजनक मोड़ लिया. एक सुबह हिरोशिमा पर एक चमकदार पीला सूरज उगा. फिर मासारू पोर्च पर हमारे पेड़ परिवार के पास आया.

"अमेरिका अपने दो सौवें जन्मदिन के उपलक्ष में एक विशेष उत्सव मना रहा है. जापानी लोग अमरीका को उपहार के रूप में बोन्साई पेड़ों का एक संग्रह भेजेंगे. मैंने लंबे समय तक इस बारे में सोचा है कि मैं अपने प्यारे कोडोमोताची - अपने बच्चों में से किसी से कैसे अलग हो सकता हूं." उसने अपनी आँखें बंद कीं और एक लंबी, धीमी साँस ली. "मियाजिमा, आपने जापान और अमेरिका के बीच युद्ध से पैदा हुई उदासी को देखा है. आपने उस उम्मीद को महसूस किया है जिसने हमारी पुनर्निर्माण में मदद की. अब आप पहले से कहीं अधिक मज़बूत, धैर्यवान और समझदार हैं. मुझे उम्मीद है कि अगर मैं आपसे, यानि अपने पसंदीदा सफ़ेद पेड़ से, शांति का पेड़ बनने को कहूँ तो आप ज़रूर मेरी बात समझेंगे."

जब ट्रक मुझे टोक्यो में हवाई अड्डे पर ले जाने के लिए आया, तो मासारू का पोता अकीरा मुझसे अलविदा कहते हुए चिल्लाया "मुझे तुम्हारी बहुत याद आएगी, मियाजिमा!"

कुछ दिनों बाद, मैं अमेरिका पहुँच गया. वाशिंगटन में नेशनल आर्बरेटम में, मैं एक नए बोन्साई परिवार में शामिल हो गया.

मैंने टूर-गाइड को यह कहते सुना, "यह पेड़ हमारे देश और जापान के बीच युद्ध में बच गया और अब इसे "शांति वृक्ष" कहा जाता है."

मुझे बहुत गर्व महसूस हुआ.
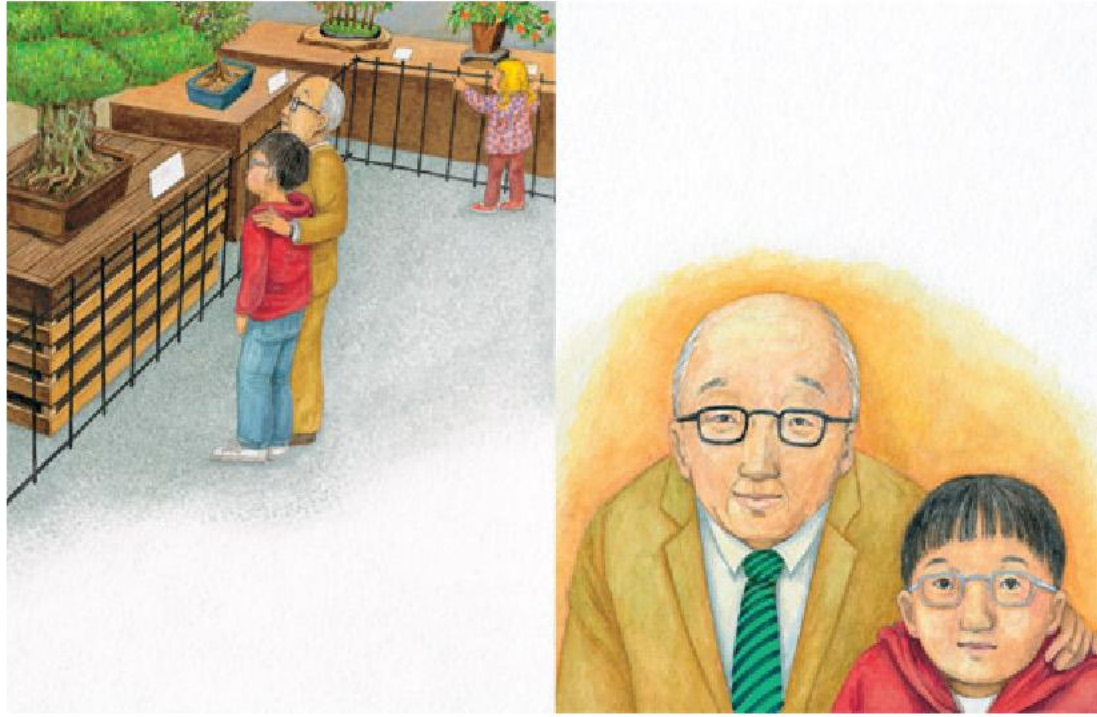
अगले साल, हमारे आर्बरेटम में एक खास आगंतुक आया. वह हवाई अड्डे से एक लंबी, काली गाडी में आया. जब उसने बोन्साई संग्रह का निरीक्षण किया, तो मेरा दिल रुक गया. वो खुद मासारू था.

वह बूढ़ा और कमजोर लग रहा था. वह एक युवा जापानी लड़के का हाथ पकड़े हुए था जिसे मैंने पहचान गया. वो उसका पोता, अकीरा था.

"अकीरा पहली बार आपसे मिलने अमेरिका आया है, मियाजिमा," उसने कहा. "हमारे लिए यह देखना महत्वपूर्ण है कि आपकी अच्छी तरह से देखभाल की जा रही है. आप हमारे एक खास पेड़ हैं. आप हमारे देश और अमेरिका के बीच शांति का प्रतीक हैं."

"आप यहाँ खुश दिख रहे हैं, मियाजिमा," अकीरा ने मेरे तने की छाल को छूने के लिए हाथ बढ़ाते हुए कहा. "अगली वसंत," उसने कहा, "हम फिर से आएंगे."

जापानी सफेद पाइन

मियाजिमा

1625 से जीवित

मासारू यामाकी और उनके

परिवार की ओर से एक उपहार.

लेखक का नोट

यह पुस्तक एक सच्ची कहानी पर आधारित है. 1976 में, जापानी लोगों ने अमेरिका के द्वि-शताब्दी या दो-सौवें जन्मदिन के जश्न के लिए उपहार के रूप में संयुक्त राज्य अमेरिका को पचास बोन्साई पेड़ (अमेरिका के पचास राज्यों में से प्रत्येक के लिए एक) दिए. जापान के सम्राट ने अपने निजी संग्रह से तीन पेड़ भी जोड़े. मासारू यामाकी ने अपने परिवार के प्रिय बोन्साई पेड़ को वाशिंगटन, डी.सी. में नेशनल आर्बोरिटम को दान कर दिया.

मैंने इस कहानी में बोन्साई का नाम मियाजिमा रखा है, उस द्वीप के नाम पर जहाँ वो महलों और समुराई के समय में पैदा हुआ था. नेशनल आर्बोरिटम में बोन्साई को "यामाकी पाइन" के नाम से जाना जाता है, जो उस जापानी परिवार के सम्मान में है जिसने तीन सौ से ज़्यादा सालों तक इसकी देखभाल की थी, और इसे "शांति वृक्ष" भी कहा जाता है क्योंकि यह जापान और अमेरिका के बीच दोस्ती का प्रतीक है, ऐसे दो देश जो दूसरे विश्व युद्ध के दौरान दुश्मन थे.

1979 में, मासारू यामाकी बोन्साई संग्रह का दौरा करने के लिए वाशिंगटन गए. वह अपने परिवार द्वारा दान किए गए सफ़ेद पाइन को ध्यान से देखने के लिए रुके. जब उनके मेज़बान ने देखा कि मासारू की आँखों में आँसू हैं, तो उन्होंने पूछा, "क्या सब ठीक है?"

"ओह हाँ," मासारू ने जवाब दिया, "ये खुशी के आँसू हैं, क्योंकि मैं बता सकता हूँ कि पेड़ यहाँ खुश है."

हालाँकि यह सच है कि मासारू के दो पोते थे, लेकिन असल ज़िंदगी में वे उसके साथ अमेरिका नहीं गए. लेकिन जब वे कॉलेज के छात्र थे, तो अकीरा और शिगेरू यामाकी अपने परिवार के सबसे पुराने सदस्य - छोटे बोन्साई पेड़ से मिलने के लिए अमेरिका गए थे. जब वे जापान लौटे, तो उनके दादा ने उन्हें बताया कि वो सफ़ेद चीड़ हिरोशिमा की बमबारी से बच गया था. इस कहानी को लिखने से कुछ साल पहले मासारू की मृत्यु हो गई, लेकिन शिगेरू ने मुझे बताया कि उसे लगता है कि उसके दादा को यह जानकर "स्वर्ग में खुशी होगी" कि उसके छोटे बोन्साई की बड़ी कहानी दूसरों के साथ साझा की जाएगी.

बोन्साई के बारे में तथ्य

बोन्साई एक प्राचीन कला है. बोन्साई की उत्पत्ति चीन में हुई थी, और जापान में एक हज़ार से भी ज़्यादा सालों से इसका अभ्यास किया जा रहा है. कलाकारों के विपरीत जो कला के काम के लिए पेंट या मिट्टी का उपयोग करते हैं, बोन्साई कलाकार एक अंकुर या बहुत छोटे पेड़ से शुरू करते हैं और कई सालों के दौरान विशेष उपकरणों से उसे आकार देते हैं.

बोन्साई कई रूपों में मौजूद हैं. बोन्साई कभी एक अकेला पेड़, या फिर कई पेड़ों का जंगल समूह या फिर एक छोटा परिदृश्य भी हो सकता है, जैसे कि चट्टानों और झाड़ियों से भरा एक पहाड़. सबसे प्रसिद्ध बोन्साई में से एक, जिसे गोशिन (सामने वाले पृष्ठ के नीचे) कहा जाता है, वास्तव में ग्यारह छोटे पेड़ हैं. बोन्साई कलाकार जॉन नाका ने गमले में एक पेड़ से शुरुआत की और जैसे-जैसे उनका परिवार बढ़ता गया, उन्होंने और पेड़ लगाए. अंत में, उनके ग्यारह पोते-पोतियों में से प्रत्येक का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक पेड़ था.

बोन्साई को प्रशिक्षित किया जा सकता है. बोन्साई कलाकार अपने पेड़ों को प्रूनिंग कैंची जैसे औजारों के उपयोग से करते हैं, लेकिन कुछ सबसे नाटकीय प्रभाव पेड़ के तने या शाखाओं को तार से जोड़कर सुंदर, साँप जैसे वक्र बनाने से पैदा होते हैं.

अधिकांश बोन्साई बहुत छोटे होते हैं. बोन्साई के पेड़ आमतौर पर छह इंच से लेकर दो फीट तक की ऊँचाई के होते हैं. नेशनल आर्बोरिटम के संग्रह में कई बोन्साई आपके स्कूल डेस्क पर फिट हो सकते हैं. इस कहानी में बोन्साई मियाजिमा, जिसे बढ़ने में कई शताब्दियाँ लगी हैं, साढ़े तीन फीट लंबा है - लगभग छह साल के बच्चे की ऊँचाई.

कुछ बोन्साई वास्तव में बहुत छोटे होते हैं. बोन्साई की एक शैली, जिसे "शितो" के रूप में जाना जाता है, थिम्बल के आकार के गमले में उगाई जाती है - लेकिन यह शैली काफी दुर्लभ है.

बोन्साई के पत्ते सामान्य पत्तियों से छोटे होते हैं. जापानी मेपल जैसे कुछ बोन्साई के पत्ते पतझड़ में रंग बदलते हैं और एक पूर्ण आकार के मेपल के पेड़ की तरह बोन्साई के पत्ते भी जमीन पर गिर जाते हैं. हालाँकि, पत्तियाँ आमतौर पर एक पूर्ण आकार के पेड़ की तुलना में बहुत छोटी होती हैं.

बोन्साई का फल जितना आप सोचते हैं उससे कहीं बड़ा होता है. यदि कोई बोन्साई सेब या नींबू के पेड़ से बनाया जाता है, तो इतने छोटे पेड़ पर आपको अपनी अपेक्षा से कहीं अधिक बड़े फल दिखेंगे.

बोन्साई लंबे समय तक जीवित रह सकते हैं. अब तक के सबसे लंबे समय तक जीवित रहने वाले बोन्साई में से एक, नौ सौ साल पुराना जापानी पेड़ जिसका नाम फ़ूडो है, उसे 1969 में ब्रुकलिन बॉटनिकल गार्डन द्वारा खरीदा गया था. दुर्भाग्य से पेड़ अपने नए घर में अच्छी तरह से ढल नहीं पाया, और उसके तुरंत बाद मर गया.